5

वैदिक आख्यान तथा वेदों के विषय में दार्शनिक विमर्ष

प्रस्तावना

इस पाठ में हम वेद में वर्णित कुछ आख्यानों का वर्णन देखेंगे। जैसे लौकिक कथा ग्रन्थों को तथा रस अलङ्कार गुण से युक्त शब्द राशि को कवियों ने रचा। वैसे ही वैदिक काल की भी सामाजिक रीति आदि को वैदिकोंपाख्यान नामक अध्याय के द्वारा हम यहाँ देखेंगे। कथा ग्रन्थों में जैसे कान्ता सम्मित वचन हैं, वैसे ही नीति पूर्ण वचन तथा प्रभु सम्मित उपदेशों से नीतिज्ञान वेदोपाख्यानों में कुछ स्थानों में प्राप्त होता है। कुछ उपाख्यानों के विषय में हम यहाँ पढेंगे। वहां आख्यान प्रतिपाद्य विविध दार्शनिकों के मत में भी वेद प्रतिपादित है। और वेद के पौरुषेयत्व तथा अपौरुषेयत्व का विचार किया गया है। पुरुष कृत पौरुषेय है। सृष्ट की ही अनित्यत्वापत्ति है। क्योंकि जिसकी सृष्टि होती है उसका विनाश अवश्यम्भावी होता है। जन्य-पदार्थों के अनादित्व के असम्भव से वे अनित्य हैं। वे कभी अपौरुषेय नहीं हो सकते। अत: वे अनित्य और पौरुषेय हैं। वेद पौरुषेय हैं अथवा अपौरुषेय इस विषय में दार्शनि कों के अनेक मत हैं। न्याय वैशेषिक-मीमांसक-सांख्य- वैयाकरण के मत में वेद का पौरुषेयत्व और अपौरुषेयत्व नित्यत्व और अनित्यत्व प्रस्तुत करते हैं।

उद्देश्य

इस पाठको पढ़ कर आप सक्षम होंगे–

- आख्यान के विषय में विशिष्ट ज्ञान प्राप्त कर पाने में;
- शुन:शेपोपाख्यान, और ऊर्वशी-पुरूरवा उपाख्या के विषय में जान पाने में;
- स्वयं भी आख्यानादि की रचना कर पाने में;

टिप्पणी

- वेद के पौरुषेयत्व तथा अपौरुषेयत्व के विषय में लघुप्रबन्ध रचना कर पाने में;
- वेद के विषय में नैयायिक तथा साङ्ख्यों के मत जान पाने में।

5.1 शुन:शेप उपाख्यान

शुन:शेपोपाख्यान ऋग्वेद के बहुत से सूक्तों में प्राप्त होता है (1/24-25)। इससे यह घटना सत्याश्रित थी ऐसा प्रतीत होता है। ऐतरेय ब्राह्मण में (7/3) यह आख्यान अतिविस्तार से वर्णित है। यह उपाख्यान पहले हरिश्चन्द्र और अन्त में विश्वामित्र का सम्बन्ध परिकल्पित करके परिवर्धित है। वरुण की कृपा से इक्ष्वाकु राजा हरिश्चन्द्र के घर में पुत्र उत्पन्न हुआ। समर्पण के समय अरण्य में हरिश्चन्द्र के पुत्र का पलायन, हरिश्चन्द्र के उदरजन्य रोगोत्पत्ति, मार्ग में अजीगर्त मध्यम पुत्र शुन:शेप का खरीदना, देवता की कृपा से उस शुन:शेप की शाप से मुक्ति, विश्वामित्र के द्वारा शुन:शेप को पुत्र के रूप में स्वीकार करना आदि विषय आलोचित है इस पाठ में। तथा यह कथा इस प्रकार सुनते हैं-

हरिश्चन्द्र नामक कोई नि:सन्तान राजा था। वरुण की उपासना करके उसने पुत्र प्राप्त किया। वरुण ने कहा कि, उत्पन्न पुत्र की मुझे बली दो। बारह वर्षीय रोहित वन को चला गया। वरुण के कोप से हरिश्चन्द्र जलोदर रोग से ग्रस्त हो गया। जब-जब रोहित वन से घर को आना चाहता था तब-तब इन्द्र उसे चरैवेति चरैवेति का उपदेश देता रहता था। अन्त में वह पिता के दु:ख को सहने में असमर्थ होकर घर की और आ रहा था तभी मध्य मार्ग में अजीगर्त नामक ब्राह्मण के मध्यम पुत्र शुन:शेप को बली के लिए खरीदा। आयोजित यज्ञ में यूप में संयत शुन:शेप को सेकड़ों मूल्य पर जब मारने को उद्यत हुए तब उसके पिता अजीगर्त को विश्वामित्र ने शुन:शेप के लिए गाथा त्रय का उपदेश किया, जिनके पाठमात्र से ही वरुण बली के बीना ही प्रसन्न हो गया। उसके बाद विश्वामित्र ने शुन:शेप को पोष्य पुत्र बना कर अपने सौ पुत्रों में इक्यावनवाँ पुत्र बनाया। जिससे उसके नीचे विद्यमान रुष्ट हुए तथा विश्वामित्र के पुत्र विश्वामित्र के ही शाप से बहेलिये-पुलिन्द-म्लेच्छ आदि होकर वहाँ रहने लगे। शुन:शेपाख्यान ऋक्शत गाथा पर आश्रित है, ऐसा एतरेयब्राह्मण के 'ऋक्शतगाथं शौन:शेपमाख्यानम्'' इस जगह स्वीकृत है।

पाठगत प्रश्न

498. शुन:शेपोपाख्यान में आदि और अन्त में किनकी परिकल्पना की गई है?

499. हरिश्चन्द्र का पुत्र किसके आशीर्वाद से उत्पन्न हुआ?

500. शुन:शेप के पिता का नाम क्या था?

501. किस वेद में यह आख्यान प्राप्त होता है?

502. शुन:शेप किसका पोषित पुत्र था?

503. गाथा त्रय किसने किसको सुनाई?

5.2 ऊर्वशी-पुरूरव उपाख्यान

वैदिक युग की यही एक रोमाञ्चकारिणी प्रणय गाथा है। राजा पुरूरवा के साथ ऊर्वशी प्रणयपाश में आबद्ध हुई। अत: उसके तीन शर्त थे।

1) वह सदैव घृताहार करेगी।

2) उसके दो प्रिय भेड सदैव उसकी शय्या के पास रस्सी से बंधे होंगे, जिससे उनको कोई भी आहत नहीं कर सकेगा, और न कोई चुरा सकेगा।

3) किसी भी अवस्था में वह राजा को नग्न नहीं देखेगी यदि क्षण भर के लिए भी ऐसा हुआ तो वह उसको छोड़ कर चली जाएगी।

राजा ने उर्वशी के तीनों शर्त सहर्ष स्वीकार किये। उसके साथ सानन्द समय यापन कर रहा था। किन्तु उर्वशी के बीना गन्धर्व स्वर्ग में नीरस और निर्जीव अनुभव करने लगे। उसके बाद वे कपट के प्रबन्ध से राजा की प्रतिज्ञा भंग करने में उद्यत हो गये। एक बार रात में उन गन्धर्वों ने कपट से भेड़ों को उर्वशी के पास से चूरा लिया। भेड़ो की करुण धवनि को सुन कर उर्वशी ने राजा को चोर के साथ युद्ध करने के लिए प्रेरित किया। राजा भी शीघ्र ही भेड़ों को चोरों से बचाने के लिए आकाश की और दौड़ा। तभी आकाश में विद्युत् के प्रकाश में गधर्वों ने छल से राजा का नग्न रूप उर्वशी को दिखा दिया। राजा को नग्न अवस्था में देख वह भी बाहर चली गयी। राजा उसके बिना विरहातुर होकर उन्मत्त की तरह भूमण्डल पर विचरने लगा। एक बार कुरुक्षेत्र के एक जलाशय में हंसी के रूप में उसने अपनी प्रिया को देखा। राजा ने उससे वापस चलने के लिए बहुत बार प्रार्थना की। लेकिन वह तो राजा के पास पुन: जाने के लिए तैयार ही नहीं हुई। राजा की दयनीय दशा देखकर गन्धर्वों के भी हृदय में सहानुभूति उत्पन्न हुई। उन्होंने भी उसे अग्नि विद्या का उपदेश किया। उनके अनुष्ठान उसने उर्वशी का अविच्छिन्न समागम प्राप्त किया।

ऋग्वेद के प्रख्यातसूक्त में (10/94) दोनों का कथोपकथन मात्र ही है। शतपथ ब्राह्मण में (1/1/5/1) यह कथानक रोचक और विस्तार से वर्णित है। वहां इस कथानक के लेखन में साहित्यिक सौन्दर्य का भी परिचय प्रदत्त है। विष्णुपुराण (4/6), मत्स्यपुराण (अ-24), और भागवत्पुराण(9/14) में इस कथानक का हम रोचक विवरण प्राप्त करते हैं। महाकवि कालिदास ने विक्रमोर्वशीय नामक नाटक में इस कथानक को नितान्त मञ्जुल नाटकीय रूप दिया। इस आख्यान के विकास में एक विशेष तथ्य की सत्ता प्राप्त होती

टिप्पणी

है। पुराणों में यह कथानक प्रणय गाथा के रूप में व्यक्त है। और वैदिकाख्यानों में पुरूरवा प्रथम व्यक्ति है, जिसने श्रौताग्नि अर्थात् आहवनीय, गार्हपत्य और दाक्षिणाग्नि नामक त्रिविध अग्नि की स्थापना का रहस्य जानकर यज्ञ संस्था का प्रथम विस्तार किया। पुरूरव के परोपकारी रूप की अभिव्यक्ति के द्वारा इस वैदिकाख्यान का वैशिष्ट्य वर्णित है।

पाठगत प्रश्न

504. पुरुरवा किसकी उपमा है?

505. उर्वशी ने राजा का परित्याग क्यों किया?

506. उर्वशी कौन थी?

507. उर्वशी प्रदत्त शर्त को राजा ने क्यों स्वीकार किया?

508. प्रथम शर्त का क्या नाम था?

509. उर्वशी के बिना स्वर्ग की कैसी दशा हो गई?

510. भेड़ो को किसने चुराया?

511. राजा आकाश की और क्यों गया था?

512. उर्वशी स्वर्ग क्यों गयी?

513. राजा ने अपनी प्रिया को कहाँ देखा?

514. क्या करके राजा ने उर्वशी को प्राप्त किया?

515. उर्वशी-पुरूखा के उपाख्यान से कलिदास ने कौन सा नाटक लिखा?

516. आहवनीय गार्हपत्य और दक्षिणाग्नी का रहस्य सर्व प्रथम किसने विस्तारित किया?

5.3 च्यवान भार्गव तथा मानवी सुकन्या का आख्यान

यह आख्यान भारतीय नारी के चरित्र का एक नितान्त उज्ज्वल दृष्टान्त समुपस्थापित करता है। यह कथा ऋग्वेद के आश्विन से सम्बद्ध सूक्तों में (1/116, 117) सङ्केतित है। यही कथा ताण्ड्यब्राह्मण (14/6/11), निरुक्त (4/19) शतपथब्राह्मण (का. 4), और भागवत्पुराण (स्क. 9अ. 3) में अतिविस्तार से प्राप्त होती है। च्यवन का वैदिक नाम 'च्यवान' है। सुकन्या की वैदिक कथा उसकी पौराणिक कथा की अपेक्षा अधिक उदात्त और आदर्शमयी है। पुराणों में सुकन्या स्वयं अपराधिनी है। वह च्यवन की दिव्य आँख को फोड़ती है। इस कर्म के लिए उसको दण्ड का विधान स्वाभाविक ही है। किन्तु वेद में उसका त्याग उच्च कोटी से वर्णित है। सैनिक बालकों के निवारण के लिए

किये गये अपराध के लिए च्यवान के सम्मुख वह आत्म समर्पण करती है। उसके दिव्य प्रेम से अश्विनों ने प्रभावित होकर उसे वार्द्धक्य से मुक्तकिया तथा उसे नूतन यौवन दिया।

तुलनात्मक अध्ययन से प्रतीत होता है कि अनेक आख्यान कालान्तर में विकृत हो जाते हैं। विकास प्रक्रिया में अनेक अवान्तरकालिकीय घटनाएँ विद्यमान हैं। वे आख्यानों से संश्लिष्ट होकर उनको अभिनव रूप देती हैं। ये परिवर्तित रूप मूलरूप से भिन्न होते हैं। शुन:शेप, विश्वामित्र वसिष्ठ इन कथानकों के अनुशीलन तथा इसके विचित्र सिद्धान्त के प्रदर्शन से दृष्टान्त समुपस्थापित होता है। शुन:शेप का आख्यान ऋग्वेद के प्रथम मण्डल में (सू 24, 25) स्पष्टत: साङ्केतित है। इसका ही विस्तार ऐतरेय की समय पञ्चिका में उपलब्ध होता है। यहाँ शुन:शेप के आख्यान के आरम्भ में राजा हरिश्चन्द्र का पुत्र रोहित के साथ तथा कथा के अन्त में मुनि विश्वामित्र के साथ सम्बद्ध होकर एक भव्य धारण करता है। कालान्तर में इस कथानक में रोचकता बढ़ाने के लिए ही उसके दो भाई, तथा पिता की दरिद्रता का विक्रयण की परिकल्पना की गई प्रतीत होती है। शुन:शेप का भी यहाँ 'कुक्कुर' अर्थ नहीं होता है। 'शुन'-शब्द का अर्थ 'सुख' और कल्याण होता है तथा 'शेप'-शब्द का अर्थ 'स्तम्भ' होता है। अत: शुन:शेप का अर्थ 'सौख्य का स्तम्भ' होता है। इस प्रकार यह कथानक वरूणपाश से विमुक्ति का सन्देश देता हुआ कल्याण के मार्ग को प्रशस्त करता है।

पाठगत प्रश्न

517. भारतीय नारी के चरित्र के नितान्त उज्वल दृष्टान्त का नाम लिखो?

518. च्यवन का वैदिक नाम क्या था?

519. च्यवन की दिव्य आँखे किसने फोड़ी?

520. शुन:शेप का क्या अर्थ है?

5.4 वशिष्ठ तथा विश्वामित्र का आख्यान

ऋग्वेद में यह स्वत:सङ्केतित आख्यान है। ये दोनों ऋषि सम्भवत: भिन्न-भिन्न-काल में राजा सुदास के पुरोहित रहे थे। चातुर्वर्ण्य के क्षेत्र से बाहर के ये ऋषि थे ऐसा स्वीकारा जा सकता है। दोनों के मध्य में परम सौहार्द की भावना का साम्राज्य था। दोनों तपस्वी, तेजस्वी, और अलौकिक गुणशाली महापुरुष थे। किन्तु रामायण-पुराण-बृहद्देवता आदि कुछ ग्रन्थों में इन दोनों के मध्य सङ्घर्ष-वैमनस्य- और विरोध आदि की कल्पना का उदय हुआ। विश्वामित्र क्षत्रिय से ब्राह्मणत्व की प्राप्ति के लिए लालायित हो गये।

टिप्पणी

वसिष्ठ ने उन्हें अङ्गीकृत नहीं किया। उससे क्रुद्ध होकर विश्वामित्र ने वसिष्ठ के पुत्रों का संहार किया। इस कल्पना को ही आधार बना कर आलोचकों ने क्षत्रियों और ब्राह्मणों के मध्य घोर विद्रोह और अमङ्गल की प्राचीर को स्थापित किया। वस्तुतः यह विचार निराधार, उपेक्षणीय तथा नितान्तभ्रामक है। वैदिक आख्यान से अपरिचित व्यक्ति ही इस प्रकार के पावन चरित्र वाले ऋषियों के अवान्तर कालिक वर्णन से भ्रान्त होते हैं। वैदिक आख्यानों का विकास अवान्तर काल में किस प्रकार से सम्पन्न हुआ यह अध्ययन का एक गम्भीर विषय है। कुछ आख्यानों के विकास का इतिहास विद्वानों ने रोचक रीति से वर्णित किया है।

पाठगत प्रश्न

521. वसिष्ठ और विश्वामित्र का आख्यान कहाँ प्राप्त होता है?

522. राजा सुदास के दो परोहित कौन कौन थे?

523. विश्वामित्र किस वर्ण के थे?

524. विश्वामित्र किस वर्ण को प्राप्त करने के लिए लालायित थे?

5.5 आख्यानों का तात्पर्य

वैदिक आख्यानों का क्या तात्पर्य है। इस प्रश्न के उत्तर में विद्वानों में वैमत्य देखा जाता है। अमेरिका के निवासी विद्वान् डॉ ब्लूम फील्ड महोदय ने इस विषय पर चर्चा करके उन विद्वानों के मत का खण्डन किया। जिन विद्वानों ने वैदिक आख्यानों की रहस्यमयी व्याख्या की। उदाहरणार्थ- इन रहस्य वादियों ने वैदिक आख्यानों में एक गम्भीर रहस्य का दर्शन किया। उनके विचार में पुरूरवा सूर्य तथा उर्वशी उषा है। उषा और-सूर्य का पारस्परिक संयोग क्षणिक होता है। उनका वियोग काल अतिदीर्घ होता है। वियुक्त सूर्य उषा की खोज में सम्पूर्ण दिन व रात घूमता है। दूसरे दिन प्रभात में उनका मेल होता है। प्राचीन भारतीय विद्वानों के मत में वैदिक आख्यानों का यही स्वरूप था। अतः मानवीय मूल्यों से विहीन वैदिक आख्यानों का चित्रण किसी भी प्रकार उपयुक्त नहीं है।

इन आख्यानों के अनुशीलन के विषय में दो तथ्यों को ध्यान में रखना चाहिए-

क) ऋग्वेदीय आख्यान इस प्रकार के विचारों का सारवर्णित करते हैं कि जो मानव और समाज के कल्याण के साधन के लिए नितान्त अपेक्षित हैं। इसका अध्ययन भी उसी प्रकार मानवीय मूल्यों को दृष्टी में रख कर करना चाहिए। ऋग्वेदीय-ऋषियों ने इन आख्यानों में मानव के कल्याणमय उपादेय तत्त्वों का समावेश किया।

ख) उसी युग के वातावरण का स्मरण करके उसी परिवेश में इन उपाख्यानों का

मूल्य निर्धारण करना चाहिए। उसी युग में इन आख्यानों का मूल्य निर्धारण करना चाहिए, जिस युग में इन आख्यानों का आविर्भाव हुआ। अर्वाचीन अथवा नवीन दृष्टी से इनका मूल्य निर्धारण इतिहास के प्रति अन्याय होगा। इन तथ्यों की आधार शिला पर आख्यानों की व्याख्या उचित और वैज्ञानिक होगी।

वैदिक आख्यानों की शिक्षा मानव समाज के सामूहिक कल्याण विश्व के मङ्गल तथा अभिवर्द्धान के लिए है। भारतीय संस्कृती के अनुसार मानव का देवों से सम्बन्ध है। मानव यज्ञों में देवों को आहुति प्रदान करता है। देव भी प्रसन्न होकर उसे प्रसन्न करते है। उसकी अभिलाषा की पूर्ती करते हैं। इन्द्र विषयक तथा अश्विनी विषयक आख्यान इस कथन के विशद दृष्टान्त हैं। यजमानों द्वारा प्रदत्त सोम रस पीकर इन्द्र नितान्त प्रसन्न होता है। वह उनकी कामना को सफल करता है। अवर्षण के वृत्र दैत्य को अपने वज्र से भेद कर नदी को प्रवाहित करता है। वृष्टी से मानव तृप्त होते हैं। संसार में शान्ति विराजमान होती है। यह वैदिक तथ्य अल्पाक्षरों में महाकवि कालिदास द्वारा व्यक्त किया गया (रघु 4/16)।

प्रत्येक आख्यानों का सार मानव के शिक्षण के लिए है। आत्रेयी और कपाल का (ऋक् 8/91) आख्यान नारी चरित्र का उदात्तता और तेजस्विता का विशद प्रतिपादक है। राजा त्यरुण-त्रैवृष्ण-वृषजों का आख्यान (ऋग् 5/2, ताण्ड्यब्रा 13/6/12, ऋग्विधान 12/52, बृहद्देवता 5/14-23) वैदिक कालिक पुरोहित की महिमा और गरिमा का स्पष्ट रूप से सङ्केत करते हैं। सोभरि और काण्व का आख्यान (ऋ 8/19, निरूक्तिः 4/15,भाग 9/6) सङ्गती की महिमा का प्रतिपादन करता है। उषसति चाक्रायण (छान्दोग्यः, प्रथ प्रपाठ खण्ड 10/11) इस आख्यान में अन्न के सामूहिक प्रभाव तथा गौरव की कमनीय कथा है। शुनःशेप आख्यान में देवता की अनुकम्पा का उज्ज्वल सङ्केत मिलता है। देवों की कृपा से शुनःशेप अपनी रक्षा करने में समर्थ हुआ। वसिष्ठ विश्वामित्र आख्यान भी उचित विश्लेषण के अभाव के कारण अनर्गल कल्पना का समुत्पादक हुआ। वसिष्ठ शारीरिक तपस्या की प्रति मूर्ति थे। विश्वामित्र तो पुरुषकार का स्वरूप थे। दोनों के मध्य प्रगाढ मैत्री थी। वैदिक राजा के यज्ञ सम्पादन में समान रूप से दोनों ही सहायक थे। उनका वैरभाव और सङ्घर्ष क्षणिक था। यावाश्व-आत्रेय की कथा (ऋग् 5/61) ऋषि के गौरव, प्रेम महिमा, और कवि की साधना को सुन्दर रीति से अभिव्यक्त करता है। ऋग्वेदीय युग की यह प्रख्यात प्रणय कथा है। जिसमें प्रेमकी सिद्धि के लिए श्यावाश्व एक मन्त्रद्रष्टा ऋषि हुए। दध्यङ्गाथर्णव का आख्यान (1/116/12, 14/4/5/13, 2/5, भागव 6/10) राष्ट्रिय-मङ्गल- जीवन दान की शिक्षा देकर क्षुद्र स्वार्थ से ऊपर उठने और जन कल्याण का उपदेश देता है। पुराण में इसका ही नाम ऋषि दधीची है। ये ही लोकहित एवं वृत्रासुर के वध के लिए सुरेन्द्र को अपनी अस्थियों का दान करते है। वज्र निर्माण के लिए अस्थियों का दान करके आर्य सभ्यता की रक्षा की। अनधिकारी को रहस्यमयी-विद्या के उपदेश का विषम परिणाम इस वैदिकाऽख्यान में प्रदर्शित है। इन आख्यानों का यही उपदेश है कि परमेश्वर के प्रति प्रगाढ़ श्रद्धा जीवात्मा से प्रेम। विश्व कल्याण के लिए यही मङ्गलमय मार्ग है।

टिप्पणी

कुछ ऋषियों के चारित्रिक दोषों तथा अनैतिक आचरण का भी वर्णन वैदिक आख्यानों में उपलब्ध होता है। इससे उपदेश ग्रहण करना चाहिए। ये आख्यान अनैतिकता के गर्त में पतन से रक्षा के लिए निर्दिष्ट हैं। तप से पवित्र जीवन में भी प्रलोभन के अवसर पर चारित्रिक पतन की सम्भावना है। कामिनी काञ्चन का प्रलोभन सामान्यजन का हृदय आकर्षित करती हैं फलतः उनसे सदैव जागरूक रहना चाहिए। इस विषयमें महाभारत का यह कथन ध्यातव्य है –

'कृतानि यानि कर्माणि दैवतैमुनिभिस्तथा।
न चरेत्तानि धर्मात्मा श्रुत्वा चापि न कुत्सयेत्॥
अनमन्यैरुपालब्धैः कीर्त्तितैश्च व्यतिक्रमैः।
पेशलं चानरूपञ्च कर्तव्यं हितमात्मनः॥' (महाभा 12/291/17)

पाठगत प्रश्न

525. आत्रेयी-कपाल का आख्यान क्या प्रतिपादित करता है?

526. वसिष्ठ किसकी प्रतिमूर्ति थे?

527. विश्वामित्र किसकी प्रतिमूर्ति थे?

528. श्यावाश्व-आत्रेय कथा की क्या विशिष्टता थी?

529. आख्यानों में क्या उपदेश है?

5.6 दार्शनिकों के मत में वेद का पौरुषेयत्व और अपौरुषेयत्व का वेदविमर्श

5.7 न्याय दार्शनिकों के मत में वेद

नैयायिक वेद के प्रामाण्य को स्वीकार करते हैं, और वेद के अनित्यत्व और अपौरुषेयत्व को नहीं स्वीकार करते हैं। उनके मत में परम पुरुष के द्वारा वेद रचित हैं। और परम पुरुष परमेश्वर हैं। इसलिए वेद पौरुषेय हैं उनका यह मत है। जैसे रघुवंश आदि कालिदास के ग्रन्थ अनित्य हैं।

पाठगत प्रश्न

530. किसका विनाश अवश्यम्भावी है?

531. नैयायिकों के मत में वेद पौरुषेय हैं अथवा अपौरुषेय?

532. नैयायिकों के मत में वेद नित्य है अथवा अनित्य?

533. नैयायिकों के मत में वेद किसके द्वारा रचित हैं।

534. परम पुरुष कौन है?

5.8 मीमांसा और वेदान्त के मत में वेद

मीमांसक और वैदान्तिक वेद का अपौरुषेयत्व प्रतिपादित करते हैं। अपूर्ण हैं पुरुष। अत: उनका ज्ञान भी अपूर्ण है। इसलिए उनकी रचना अथवा वाक्य में भ्रम प्रमाद और विप्रलिप्सा होती ही है। और इन्द्रिय की अपूर्णता के कारण दोष सम्भव हैं। परन्तु वेद वाक्य में भ्रम प्रमाद आदि दोष नहीं हैं। इसलिए वेद पौरुषेय नहीं है। सर्वज्ञत्व और सर्वशक्तिमत्त्व से परमेश्वर ही रचने में समर्थ है। तथापि वेदों को परमेश्वर ने रचा नहीं। सूर्य की रश्मियाँ जैसे सूर्य से स्वयं प्रकाशित होती हैं वैसे ही वेद भी परमेश्वर से स्वयं प्रकाशित हुए। जैसे कि बृहदारण्य कोपनिषद् में कहा गया है – 'अस्य महतो भूतस्य नि:श्वसितं यदेतत् ऋग्वेदो यजुर्वेद: सामवेद:' इति। श्वास जैसे स्वाभावि कार्य है इसको लेने में चेष्टा नहीं की जाती वैसे ही वेद भी परमेश्वर के प्रज्ञा स्वरुप हैं चेष्टा कृत था बुद्धि परिकल्पित नहीं हैं। यहाँ ज्ञातृ और ज्ञान में अभेद है। प्रतिकल्प में परमेश्वर से वेद का ज्ञान प्रकाशित होता हैं। ब्रह्मा वेद के कर्ता नहीं हैं, वह तो स्मर्ता अर्थात् केवल स्मरण कर्ता है। पराशर संहिता में कहा गया है कि – 'न कश्चित् वेदस्य कर्तास्ति वेदस्मर्ता चतुर्मुख:' इति।

अर्थात् कोई भी वेद का कर्ता नहीं है। ब्रह्मा केवल वेद का स्मरण कर्ता है।

ब्रह्मा आदि सभी ऋषि वेद के स्मारक हैं न की कारक। ब्रह्मा आदि सभी ऋषि मन्त्र द्रष्टा वेद के धारक तथा वाहक हैं वेद के कर्ता अथवा रचयिता नहीं हैं। नित्य विद्यमान वेद परमेश्वर प्रत्येक कल्प में ब्रह्मा को देते हैं।

'यो ब्रह्माणं विदधाति पूर्वं यो वै वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै'। वेद नित्य, तथा सदा विराजमान रहते हैं। प्रत्येक कल्प में ब्रह्मा उसकी पुनरावृत्ति करता है। युगान्त अथवा प्रलयकाल में भी वेद परब्रह्म में ही अभिन्न रुप से रहते हैं। कल्प के आरम्भ में पुन: ऋषि तपस्या के द्वारा वेद मन्त्रों को प्राप्त करते हैं। अत: कहा भी गया है–

युगान्ते अन्तर्हितान् वेदान् सेतिहासान् महर्षय:।
लेभिरे तपसा पूर्वमनुज्ञाता स्वयम्भूवा॥

यास्क के मत में ऋषि शब्द का अर्थ मन्त्र द्रष्टा है। यास्क के मत में ऋषि शब्द की व्युत्पत्ति है –अजानन् ह वै पृश्नीं स्तपस्य मानान् ब्रह्म स्वयम्भू अभ्यानर्षत्तदृषयोऽभवन्। तपस्यारत जन्म रहित ऋषियों के समीप स्वयं ब्रह्म अर्थात् वेद गये। मन्त्र द्रष्टा ऋषि कहे जाते हैं। निरुक्त में वेद स्वयम्भू उत्पत्ति रहित तथा अपौरुषेय कहे गये हैं।

वेदभाष्यकार सायणाचार्य ने वेद का अपौरुषेयत्व स्वीकार किया। भाष्य रचना के पूर्व महेश्वर को प्रणाम करके निवेदन करते हैं।

टिप्पणी

'यस्य निःश्वसितं वेदाः यो वेदेभ्योऽखिलं जगत।
निर्ममे तमहं वन्दे विद्यातीर्थ महेश्वरम।

अर्थात् वेद चतुष्टय से उत्पन्न निखिल भुवन जिसका निःश्वास स्वरूप है, और जो सब विद्या का आधार है उस परमेश्वर महेश्वर की मैं वन्दना करता हूँ। वेद महेश्वर के निःश्वास स्वरूप हैं ऐसा कह कर सायणाचार्य ने वेद का अपौरुषेयत्व प्रतिपादित किया।

परमेश्वर वेद के आधार हैं न की रचयिता। परमेश्वर के वेद कर्तृत्व के प्रतिपादन में वेद का अनित्यत्व, तथा परमेश्वर का सर्वज्ञत्व का अभाव सिद्ध होता है। परमेश्वर त्रिकालदर्शी है। अतः वह सर्वज्ञ है, इससे उसके लिए किसी भी विषय का ज्ञान अगम्य है ऐसा नहीं कहा जा सकता। परमेश्वर ने वेद रचे ऐसा कहने पर उसके सर्वज्ञत्व का अभाव सिद्ध होता है। उसके सर्वज्ञत्व से वेद सर्वदा उसके ज्ञानगम्य थे। अतः वेद नित्य हैं। कल्पभेद में भी उसमें परिवर्तन नहीं होता है।

जिसका आदि नहीं होता वह अनादि कहलाता है। आदि उच्चारण मात्र से शब्द तथा वाक्य का कर्तृत्व प्रतिपादित होता है, और आदि उच्चारण मात्र से पूर्व वह शब्द नहीं था ऐसा ज्ञात होता है अतः वह शब्द अथवा वाक्य पौरुषेय है। यही पौरुषेय का धार्म तथा वैशिष्ट्य है। अतः प्रत्येक कल्प में वेद का स्मरणत्व प्रतिपादित है न की उच्चारणत्व। उसके बाद प्रत्येक कल्पमें वेद का सजातीय उच्चारणत्व भी प्रतिपादित है। इससे वेद अनादि था अनन्त हैं। अत वेद अपौरुषेय हैं न की पौरुषेय। क्योंकि पुरुष का आदि है। आदि होने से उसका विनाश भी अवश्यम्भावी है। वेद के अपौरुषेय होने से उसका विनाश नहीं होता अतः वह अनादि अनन्त और नित्य है। अतः परमेश्वर के साथ वेद का सम्बन्धभी अनादि तथा अनन्त काल से है।

पूर्व मीमांसकों के मत में वेद नित्य है। और उसका आधार परमेश्वर नहीं होता है। पूर्वमीमांसकों और वेदान्तियों के मत में ब्रह्म वेद का उत्सर्जन कर्ता और आधार है। वेदान्त दर्शन के ब्रह्मसूत्र में 'शास्त्रयोनित्वात' इस प्रथमाध्याय के तीसरे सूत्र में ब्रह्म को वेद चतुष्टय की योनि कहा है। अतः वेद का कारण ब्रह्म है। इस सूत्र के भाष्य में भगवान् शङ्कराचार्य ने कहा- 'न ही शस्य शास्त्रस्य ऋग्वेदादिलक्षणस्य सर्वज्ञगुणान्वितस्य सर्वज्ञात् अन्यतः सम्भवोऽस्ति'। अतः सभी विद्या के आधार अखिल धर्म मूल, वेदशास्त्र के उत्स्रष्टा सर्वज्ञ ब्रह्म ही है अन्य कोई नहीं। शुक्ल यजुर्वेद के शतपथ ब्राह्मण में कहा है कि- ''ब्रह्म ही त्रयीविद्या अथवा वेदविद्या का प्रकाशक है''। अतः कहा है कि -'ब्रह्म एव प्रथमसृजत त्रयीमेव विद्याम्' (6-1-14)। कृष्ण यजुर्वेद के तैत्तिरीय ब्राह्मण में ब्राह्मण को वेद का उत्स्रष्टा कहा है। अतः तमनु त्रयो वेदा असृजन्त (2-3-10-1)। वैशेषिक दर्शन में तो वेद को ईश्वर की वाणी बताया गया है। अतः उसका प्रमाण स्वीकार किया जाता है।

वेदान्त दर्शन और पूर्वमीमांसा दर्शन में वेद का अपौरुषेयत्व तथा प्रामाणत्व प्रतिपादित है। किन्तु वेद के नित्यत्व के विषय में दोनों दर्शनों में प्रस्थान भेद लक्षित होता है। पूर्वमीमांसा दर्शन में शब्द का नित्यत्व प्रतिपादित है। न्यायदर्शन में शब्द का अनित्यत्व प्रतिपादित

है। जैमिनि तथा न्याय दर्शन में शब्द के अनित्यत्व का खण्डन तथा नित्यत्व प्रतिपान है। शब्द का नित्यत्व प्रमाणित होने पर वेद का भी नित्यत्व प्रतिपादित होता है। कूटस्थ नित्यता और अप्रवाह नित्यता भेद से वेदान्त दर्शन में नित्यता दो प्रकार की है। कूटस्थ अर्थात् हमेशा एक रुप निर्विकार। वेदान्त दर्शन में परब्रह्म की कूटस्थ नित्यता और पारमार्थिक सत्ता स्वीकार की जाती है। ब्रह्म वै सर्वे एव अनित्या: यह वेदान्तियों का सिद्धान्त है। जिसके आविर्भाव के साथ तिरो भाव हैं। जो प्रत्येक कल्प में अभिव्यक्त होता है, और जिसका प्रलय काल में कुछ समय के लिए तिरोभाव होता है वहीं प्रवाहनित्यता है। वैसे पदार्थ की कूटस्थनित्यता नहीं है केवल प्रवाह नित्यता है। क्योंकि प्रत्येक कल्प में उनकी सृष्टि और प्रलय होता है। तथा वेद प्रलयकाल में परमेश्वर में लीन हो जाते हैं। कल्प के आरम्भ में पुन: परमेश्वर वेद को स्मरण करता है। अत: वेदान्त में वेद की प्रवाह नित्यता स्वीकृत है न की कूटस्थ नित्यता। वेद की नित्यता के प्रसङ्ग में वैदान्तिक सिद्धान्त ब्रह्म सूत्र में प्रतिपादित हैं (1-3-29)। वाचा विरूपनित्यया, अनादिनिधाना नित्या वागुत्सृष्टा स्वयमभूवा आदि श्रुतिस्मृती के वाक्यों में वेद की प्रवाह नित्यता उद्घोषित है। पूर्व मीमांसकों के मत में एकरूप जगत की प्रवाह नित्यता का प्रसङ्ग ही नहीं है। अत: मीमांसा दर्शन में वेद की कूटस्थ नित्यता तथा पारमार्थक नित्यता स्वीकृत है।

पाठगत प्रश्न

535. मीमांस कों तथा वैदान्तियों के मत में वेद पौरुषेय है अथवा अपौरुषेय?

536. पुरुषों का ज्ञान अपूर्ण किस लिए होता है?

537. पुरुषों की रचना में दोष क्यों होते हैं?

538. वेद किससे स्वयं प्रकाशित हुए?

539. वेद परमेश्वर का कौन सा स्वरुप है?

540. वेद का स्मरण कर्ता कौन है?

541. कौन मन्त्र द्रष्टा हैं?

542. प्रत्येक कल्प में परमेश्वर वेद का ज्ञान किसको देता है?

543. प्रलय काल में वेद कहाँ रहते हैं?

544. यास्क के मत में ऋषि शब्द का क्या अर्थ है?

545. वेद के विषय में निरुक्त कार का क्या मत है?

546. आचार्यसायण के मतानुसार वेद पौरुषेय है अथवा अपौरुषेय?

टिप्पणी

547. वेद भाष्यकारों के मतमें वेद किसके स्वरुप हैं?

548. क्या अनादि है?

549. क्या अनन्त है?

550. पूर्वमीमांसकों के अनुसार वेद नित्य है अथवा अनित्य?

551. पूर्वमीमांसकों के मत में वेद का उत्स्रष्टा कौन है?

552. शास्त्रयोनित्वत् इस सूत्र का सामान्य अर्थ क्या है?

553. किस दर्शन में वेद को ईश्वर की वाणी कहा है?

554. नैयायिकों के मत में शब्द नित्य है अथवा अनित्य?

555. नित्यता कितनी हैं। और कौन-कौन सी हैं?

556. वेदान्त दर्शन में ब्रह्म की कैसी नित्यता वर्णित है?

557. कूटस्थ नित्यता का साधारण लक्षण बताओ?

558. प्रलय काल में वेद कहाँ लीन हो जाते हैं?

559. मीमांसा दर्शन में वेद की किस प्रकार की नित्यता का वर्णन है?

5.9 सांख्य के मत में वेद

सांख्य दर्शन में वेद की नित्यता को स्वीकार नहीं किया गया किन्तु वेद को अपौरुषेय स्वीकार किया है। वेद ऋषि गण कर्तृक और दृष्ट हैं। अत: वेद का कोई रचयिता नहीं है। और न कोई अपने मतानुसार वेद प्रामाण्य अथवा वेद के आविर्भाव का विषय स्वीकार करता है। अत: वेद अपौरुषेय हैं। वेद के कर्ता का कोई भी स्वरुप नहीं है। अत:- न पौरुषेयत्वं तत्कर्तृतु: पुरुषस्य अभावात् (सांख्यसूत्रं 5-46)। श्रुति तथा स्मृती के अनुसार प्रतिपादित वेद की नित्यता सांख्य के मत में गुरु शिष्य परम्परा में वेद का अविच्छिन्न प्रवाह है। ऋषिगण के द्वारा उच्चारित वैदिक शब्दों का समूह गुरु शिष्य परम्परा में आज भी अक्षुण्ण रूप से उच्चारण होता है। परमेश्वर की तरह ही तथा सांख्य के पुरुष की तरह ही अनादि नित्यता तथा कूटस्थ नित्यता वेद की नहीं है। क्योंकि प्रत्येक मन्त्र का द्रष्टा कोई ऋषि है। अत: उस ऋषि से पूर्व उस मन्त्र का अस्तित्व नहीं था। मन्त्र द्रष्टा से लेकर गुरु परम्परा पर्यन्त वेदाध्ययन निरवच्छिन्न भाव से चलता है। अत: जैसे पूर्वकाल में वेदोच्चारण होता था। उसके समान उच्चारण से आज भी वही उच्चारण प्रथा आदि काल से ही चल रही है। इसलिए वेद के सजातीय उच्चारण प्रवाह की नित्यता स्वीकार की जाती है अर्थात् प्रवाह नित्यता सांख्य दर्शन में स्वीकृत है। न की अनादि अनन्त नित्यता है।

5.10 वैयाकरणों के मत में वेद

महाभाष्यकार भगवान् पतञ्जलि ने पाणिनिप्रणीत 'तेन प्रोक्तम्' इस सूत्र के भाष्य में वेद की नित्यता के प्रसङ्ग में कहा कि-वेद का अर्थ नित्य है किन्तु शब्द राशि अथवा वर्णानुपूर्वी अनित्य है। उन्होंने कहा कि- अर्थ नित्य है, किन्तु यह वर्णानुपूर्वी ही तो है। प्रत्येक महाप्रलय के अनन्तर वेद की वर्णानुपूर्व्य अक्षर परम्परा का विनाश होता है। प्रत्येक कल्प में पुन ऋषि गण वेद का स्मरण करते हैं। वर्णराशी के लोप होने पर भी वेद के अर्थ नित्य ही रहते हैं। वर्णानुपूर्व्य के भेद से नाना प्रकार की शाखाओं की उत्पत्ति हुई। जैसे ऋग्वेद के इक्कीस, सामवेद के हजार भेद (सहस्रवर्त्मा सामवेदः) हैं। अतः महाभाष्यकार पतञ्जलि के मतानुसार वेद के अर्थ नित्य हैं, तथा वर्णानुपूर्वी अनित्य है। अर्थात् आंशिक रूप में नित्य तथा आंशिक रूप में अनित्य हैं।

न्याय दर्शन में वेद और शब्द की नित्यता स्वीकार नहीं की गयी है। वेद की अनाद्यनन्त नित्यता अर्थात् कूटस्थ नित्यता स्वीकार नहीं की जाती है। परन्तु प्रवाह नित्यता स्वीकार की जाती है। और वहाँ मन्त्रायुर्वेद की तरह ही उसका प्रमाण है आप्त प्रमाण से न्याय दर्शन के सूत्र भाष्य में वात्स्यायन ने कहा कि- मन्वन्तरयुगान्तरेषु चातीतानागतेषु सम्प्रदायाभ्यास-प्रयोगा विच्छेदो वेदानां नित्यत्वम् इति अर्थात् अतीत, अनागत, मन्वन्तर, प्रलय, कल्प तथा सम्प्रदाय क्रम में उसके अभ्यास और प्रयोग निरवच्छिन्न भाव से चलते रहते हैं वही वेद की नित्यता है। यही प्रवाह नित्यता है।

भाष्यकार सायणाचार्य वेद की अनादि अनन्त नित्यता स्वीकार नहीं करते हैं। उनके मतानुसार वेद की नित्यता एक कल्पस्थायी है। प्रत्येक कल्प में वेद अभिव्यक्त होकर प्रलय काल में परमेश्वर में लीन हो जाते हैं। अर्थात् पुनः प्रत्यावर्तित होते हैं। अतः वेद भाष्यकार आचार्यसायण के मतानुसार वेद की प्रवाह नित्यता है।

पाठगत प्रश्न

560. सांख्य के मत में वेद नित्य है अथवा अनित्य?

561. वैयाकरणों के मत में वेद नित्य है अथवा नहीं?

पाठ का सार

वशिष्ठ और विश्वामित्र का आख्यान, च्यवान भार्गव तथा मानवी सुकन्या का आख्यान, ऊर्वशी-पुरूवरा का उपाख्यान, शुनःशेप का उपाख्यान इत्यादि उपाख्यान हमने यहाँ जाने। इनके आलावा भी अनेक उपाख्यान हैं। परन्तु विस्तार के भय से उनका यहाँ वर्णन नहीं किया गया।

इसके बाद हमने वेद के पौरुषेयत्व के विषय में कुछ मतों को जाना। पूर्व मीमांसा दर्शन

वेदान्त दर्शन तथा सांख्य दर्शन में वेद अपौरुषेय है केवल न्याय दर्शन में ही पौरुषेय है। पूर्व मीमांसा दर्शन में वेद की कूटस्थ नित्यता स्वीकार की गई है। वेदान्त दर्शन सांख्य दर्शन तथा न्याय दर्शन में वेद की प्रवाह नित्यता स्वीकृत है न कि कूटस्थ नित्यता। वैयाकरणियों के मत में वेद के अर्थ नित्य हैं परन्तु शब्द राशी अनित्य है। श्रुति स्मृति आदिग्रन्थों में वेद की नित्यता स्वीकार की गई है। वेदान्त सांख्य और न्याय के मत में वेद का कारण ब्रह्म है। वेद के उत्सर्जन से वेद प्रामाण्य और प्रवाह नित्य है। पूर्व मीमांसकों के मत में परमेश्वर ने वेद का उत्सर्जन नहीं किया। उनके मत में शब्द नित्य है। वे जैमिनि न्याय दर्शन में प्रमाणित शब्द के अनित्यत्व का खण्डन करके शब्द के नित्यत्व का प्रतिपादन करते हैं। उनके मत में शब्द के नित्यत्व से वेद का भी नित्यत्व सिद्ध होता है।

पाठान्त प्रश्न

562. उर्वशी पुरुरवा की एक रहस्य वादिनी व्याख्या लिखो?

563. वसिष्ठ विश्वामित्र के उपाख्यान को संक्षेप से लिखो?

564. उर्वशी के तीन शर्त कौन से थे?

565. पुरुरवा ने उर्वशी से कैसे अविच्छिन्न समागम प्राप्त किया?

566. च्यवान भार्गव तथा मानवी सुकन्या का आख्यान कहाँ-कहाँ प्राप्त होता है?

567. उर्वशी के तीन शर्तों के नाम लिखो?

568. उर्वशी-पुरुरवा के आख्यान का प्रतिपादन करो?

569. च्यवान भार्गव तथा मानवी सुकन्या का आख्यान लिखो?

570. वसिष्ठ विश्वामित्र का आख्यान संक्षेप में लिखो?

571. आख्यानों का तात्पर्य लिखिए?

572. शुन:शेप उपाख्यान को लिखिए?

573. न्याय दर्शन के मत में वेद का प्रतिपादन कीजिए?

574. मैमांसिको के मत में वेद का प्रतिपादन कीजिए?

575. सांख्य दार्शनिकों के मत में वेद का प्रतिपादन कीजिए?

576. वैयाकरणियों के मत में वेद का प्रतिपादन कीजिए?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

उत्तर-1

577. हरिश्चन्द्र और विश्वामित्र

578. वरुण का

579. अजीगर्त।

580. ऋग्वेद में।

581. विश्वामित्र का।

582. विश्वामित्र शुन:शेप के लिए।

उत्तर-2

583. उर्वशी को।

584. राजा को नग्न देखकर।

585. उर्वशी एक अप्सरा थी।

586. समय को स्वीकार करके विचार करके किया।

587. वह सदा घृताहार करेगी।

588. उर्वशी के बीना गन्धर्वों को स्वर्ग नीरस और निर्जीव लगने लगा।

589. गन्धर्वों ने कपट से भेड़ चुराया।

590. भेड़ की करुण धवनि को सुनकर, और चोरों से भेड़ की रक्षा के लिए।

591. राजा का नग्न रूप देखकर।

592. कुरुक्षेत्र के एक जलाशय में हंसी के स्वरूप में स्वप्रिया को देखा।

593. अग्नि विद्या के अनुष्ठान से।

594. विक्रमोर्वशीय नामक नाटक।

595. पुरुरवा।

उत्तर- 3

596. मानवी सुकन्या।

597. च्यवन।

598. मानवी सुकन्या।

599. सौख्य का स्तम्भ'।

उत्तर- 4

600. ऋग्वेद में।

601. वसिष्ठ और विश्वामित्र।

602. क्षत्रीय।

603. ब्राह्मणत्व प्राप्ति के लिए।

उत्तर- 5

604. नारी चरित्र की उदात्तता और तेजस्विता का प्रतिपादन।

605. शारीरिक तपस्या का।

606. पुरुषकार का।

607. ऋषि के गौरव, प्रेम महिमा, और कवि की साधना अभिव्यक्त करता है।

608. परमेश्वर के प्रति प्रगाढ श्रद्धा, जीवात्मा के साथ प्रेम, विश्व कल्याण के लिए यही मङ्गलमय मार्ग है।

उत्तर- 6

609. सृष्ट का।

610. पौरुषेय।

611. नित्य।

612. परम पुरुष के द्वारा।

613. परमेश्वर।

उत्तर- 7

614. अपौरुषेय।

615. वे अपूर्ण हैं अतः उनका ज्ञान भी अपूर्ण है।

616. भ्रम प्रमाद विप्रलिप्सा और इन्द्र के अपूर्ण होने कारण दोष उत्पन्न होते हैं।

617. परमेश्वर के साथ से।

618. प्रज्ञा स्वरुप।

619. ब्रह्मा।

620. वेद मन्त्रों को जिसने देखा।

621. ब्रह्म में।

622. परब्रह्म में अभिन्न रुप से।

623. मन्त्र द्रष्टा।

624. वेद स्वयम्भू अपौरुषेय है।

625. अपौरुषेय।

626. महेश्वर के निश्वास स्वरुप।

627. जिसका आदि नहीं है।

628. जिसका अन्त नहीं है।

629. नित्य।

630. ब्रह्म।

631. ब्रह्म वेद चतुष्ट की योनि।

632. वैशेषिक दर्शन में।

633. अनित्य।

634. दो प्रकार से। कूटस्थ नित्यता और प्रवाह नित्यता।

635. कूटस्थ नित्यता।

636. जिसके आविर्भाव के साथ तिरोभाव होता है।

637. परब्रह्म में।

638. कूटस्थ नित्यता।

उत्तर-8

639. अनित्य

640. नित्य।

पांचवां पाठ समाप्त